DSSSB TGT & PGT
दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
ROJGAR WITH ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
अग्निपुराण
5 Sol
शाम 5 बजे
LIVE
04-09-2024 05:00 PM

अग्निपुराण

(एक संक्षिप्त परिचय)

उपयोगिता की दृष्टि से यह सबसे **महत्त्वपूर्ण पुराण** है।

अग्नि के द्वारा वसिष्ठ को उपदेश दिये जाने के कारण इसे **'अग्निपुराण'** कहा गया है।

यह भारतीय संस्कृति तथा विद्याओं का **'महाकोश'** है जिसमें भारतीय-वाङ्मय के उत्कृष्ट ग्रन्थों और विषयों का रोचक सार- सङ्कलन है। अतः इसे **'विश्वकोश'** कहा जाता है।

पुराणों के लक्षण के अतिरिक्त इसमें भूगोल, गणित और फलित-ज्योतिष्, विवाह और मृत्यु की धार्मिक क्रियायें, शकुनविद्या, वास्तुविद्या, दिनचर्या, नीतिशास्त्र, युद्धविद्या, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, छन्द, काव्यशास्त्र, व्याकरण, कोशनिर्माण आदि नाना विषयों पर प्रकाश डाला गया है, अर्थात् विश्वकोशात्मकता इस पुराण की विशिष्टता है।

पुराणों में दिये गये विवरणों के अनुसार तो इसमें पन्द्रह हजार चार सौ (15,400) श्लोक थे, किन्तु वर्तमान अग्निपुराण में 383 अध्याय तथा प्रायः साढ़े ग्यारह हजार श्लोक हैं।

इसके अतिरिक्त योगशास्त्र के यम, नियम आदि आठ अङ्गों का वर्णन संक्षेप में बड़ा ही सुन्दर है। अन्त में अद्वैत वेदान्त के सिद्धान्तों का सार-संकलन है। एक अध्याय में गीता का भी सारांश एकत्रित किया गया है। अग्निपुराण में प्राप्त काव्यादि के विशिष्ट लक्षण यहाँ संक्षेप में लिखित हैं-

काव्यलक्षण-

काव्य को स्फुट रूप से अलङ्कारयुक्त तथा गुणसम्पन्न एवं दोष विहीन होना चाहिए। काव्यं स्फुरदलङ्कारं गुणवद्दोषवर्जितम् (अ.पु. 337.7)

काव्यभेद-

अग्निपुराण में काव्य के तीन भेद प्रतिपादित हैं- गद्य, पद्य और मिश्र।

गद्यं पद्यं च मिश्रं च काव्यादि त्रिविधं स्मृतम्। (अ.पु.-337.8)

कवि का महत्त्व- अपार काव्य संसार में कवि ही निर्माता है, जैसी उसकी रुचि होती है वैसी ही सृष्टि करता है-

अपारे काव्यसंसारे कविरेव प्रजापतिः ।
यथा वै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते ।। (अ.पु.-339.10)

रीति- वाग्विद्या के सम्यक् ज्ञान में जो शैली कथित है वह रीति है। यह चार प्रकार की बतलायी गयी है- पाञ्चाली, गौडी, वैदर्भी, लाटी या लाटजा।

वाग्विद्यासम्प्रतिज्ञाने रीतिः साऽपि चतुर्विधा।
पाञ्चाली गौडदेशीया वैदर्भी लाटजा तथा।। (अ.पु.-340.1)

अलङ्कार- काव्य के शोभाकारक धर्म अलङ्कार कहलाते हैं –

काव्यशोभाकरान्धर्मानलङ्कारान्प्रचक्षते। (अ.पु.-342.17)

दोष **सभ्यों -** (सहृदयों) को उद्विग्न करने वाला तत्त्व दोष है-

उद्वेगजनको दोषः सभ्यानाम् । (अ.पु.-347.1)

अथ द्व्यशीत्यधिकद्विशततमोऽध्याय:

वृक्षायुर्वेद:

282

धन्वन्तरिरुवाच

वृक्षायुर्वेदमाख्यास्ये प्लक्षश्चोत्तरत: शुभ: ।
प्राग्वटो याम्यतस्त्वाम्र आप्येऽश्वत्थ: क्रमेण तु ॥1॥

आचार्य धन्वन्तरि ने बोला वृक्षायुर्वेद को कहूंगा। पाखरि (पाकरि) उत्तर दिशा में, पूर्व में बरगद, दक्षिण में आम्र और पश्चिम में पीपल शुभ है।।1।।

दक्षिणां दिशमुत्पन्ना: समीपे कण्टकद्रुमा:।
उद्यानं गृहवासे स्यात्तिलान्वाऽप्यथ पुष्पितान् ॥2॥
गृह्णीयाद्रोपयेद्वृक्षान्द्विजं चन्द्रं प्रपूज्य च।
ध्रुवाणि पञ्च वायव्यं हस्तं प्राजेशवैष्णवम् ॥3॥
नक्षत्राणि तथा मूलं शस्यन्ते द्रुमरोपणे।
वेशयेन्नदीवाहान्पुष्करिण्यां तु कारयेत् ॥4 ॥

दक्षिण दिशा में काँटेवाले वृक्ष (बवूर, बेर आदि) समीप में शुभ हैं। गृह के पास उद्यान होना चाहिए। उद्यान में तिल या फूलवाले वृक्षों का रोपण करना चाहिए। रोपण के पूर्व ब्राह्मण और चन्द्रमा की पूजा कर लें। वृक्षों के आरोपण, ध्रुव (तीनों उत्तरा- उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी और रेवती) अभिजित् (यह मुहूर्त का नाम है दोपहर को नित्य आता है), हस्त, पूर्वाषाढ़ा, शतभिष और मूल पाग नक्षत्रों में करना चाहिए। उद्यान में नदी के प्रवाह का प्रवेश करावे अथवा एक बावली बनवा दे। ॥ 2-4 ॥

हस्तो मघा तथा मैत्रमाद्यं पुष्पं सवासवम् ।
जलाशयसमारम्भे वारुणं चोत्तरात्रयम् ॥5॥

सम्पूज्य वरुणं विष्णुं पर्जन्य तत्समाचरेत् ।
अरिष्टाशोकपुंनागशिरीषाः सप्रियंगवः ॥6॥

अशोकः कदली जम्बुस्तथाबकुलदाडिमाः।
सायं प्रातस्तु घर्मान्ते शीतकाले दिनान्तरे ॥711
वर्षारात्री भुवः शोघे सेक्तव्या रोपिता द्रुमाः।

पुष्करिणी (जलाशय) बनवाने के लिए हस्न, मघा, अनुराधा, अश्विनी, पुष्य, धनिष्ठा, शतभिषा और तीनों उत्तरा उत्तम माने जाते हैं। जलाशय बनवाने से पूर्व वरुण, विष्णु और पर्जन्य की पूजा करे तब कार्य प्रारम्भ करे। नीम, अशोक, सोपारी, शिरीष, प्रियंगु, कदली (केला), जामुन, वकुल और अनार के वृक्ष लगावे। वर्षा के प्रारम्भ में सायंकाल और प्रात: काल वृक्षों का आरोपण करे और शीतकाल में दिन के अन्त में वृक्षारोपण उत्तम होता है। वर्षाकाल में रात्रि में वृक्ष लगाना उत्तम है। पृथ्वी के सूख जाने पर वृक्षों को सींचना चाहिए।। 5-7 1/2 11

उत्तमा विंशतिर्हस्ता मध्यमाः षोडशान्तराः ॥8॥

स्थानात्स्थानान्तरं कार्यं वृक्षाणां द्वादशावरम् ।

विफलाः स्युर्घना वृक्षाः शस्त्रेणाऽऽदौ हि शोधनम् ॥9॥

वृक्षों का एक से दूसरे से अन्तर बीस हाथ पर उत्तम माना जाता है, सोलह हाथ का अन्तर मध्यम है एवं बारह हाथ का अन्तर अधम माना जाता है। क्योंकि घने वृक्षों में फल नहीं लगते। वृक्षों के आरोपण से पहले शस्त्र से जमीन पर गड्डा बनाकर उसकी शुद्धि कर लें।18-911

विडङ्गघृतपङ्काक्तान्सेचयेच्छीतवारिणा ।
फलनाशे कुलत्यैश्च मापैर्मुग्दैर्यवैस्तिलैः ॥10॥
घृतशीतपयः सेकः फलपुष्पाय सर्वदा ।
आविकाजशकृच्चूर्णं यवचूर्णं तिलानि च ॥11॥

जिस गड्ढे में वृक्ष लगाया जाय उसे जल से भर दे और उसमें वायविडंग का चूर्ण घृत से लपेटकर छोड़ दे इससे भूमि शुद्ध हो जाती है। जिस वृक्ष का फल लगकर झड़ जाता हो उसकी जड़ में कुलथी, उड़द, मूंग, तिल और यव के चूर्ण से मिश्रित शीतलजल से सिंचन करे तो सदा पुष्प और फल लदा रहेगा।

इसी तरह भेड़ें एवं बकरी की लेंड़ी (गोबर) का चूर्ण, जवा का चूर्ण और तिल का चूर्ण घृत से सानकर शीतल जल में मिला दे और उससे वृक्ष को सींचने से फल लगते हैं।। 10-11।।

गोमांसमुदकं चैव सप्तरात्रं निधापयेत् ।
उत्सेकः सर्ववृक्षाणां फलपुष्पादिवृद्धिदः ॥ 12 ॥

मत्स्याम्भसा तु सेकेन वृद्धिर्भवति शाखिनः।
विडङ्गतण्डुलोपेतं मात्स्यं मांसं हि दोहदम् ॥13॥
सर्वेषामविशेषेण वृक्षाणां रोगमर्दनम् । ॥14 ॥

सात रात्रि तक जल में गोमांस रख दे और उससे वृक्ष को सींचने से सभी वृक्ष फल-पुष्प से लदे रहते हैं।

मछली के घोवन (जल) से सींचने पर वृक्षों की वृद्धि होती है और वायविडंग के चावल तथा मछली का मांस वृक्षों का दोहद है (गर्भित होते हैं) और सामान्य रूप से सभी वृक्षों के रोगों को नष्ट करनेवाला है।। 12-14।।

अग्निपुराण (बिन्दुवार प्रश्न)

↓

अग्निपुराणे वृक्षायुर्वेदं कः उवाच ? - धन्वन्तरिः

कः वृक्षायुर्वेदम् आख्यास्यते ? - धन्वन्तरिः

गृहवासस्य उत्तरतः शुभवृक्षः कः? - प्लक्षः (पाकड़)

पूर्वस्यां दिशि शुभः वृक्षः भवति - वटः (बरगद)

दक्षिणदिशायां कः वृक्षः शुभः भवति ? आम्रवृक्षः

कां दिशम् उत्पन्नाः कण्टकद्रुमाः शुभाः भवन्ति ? - दक्षिणाम्

धन्वन्तर्यनुसारम् उद्यानं कुत्र स्यात् ? गृहवासस्य समीपे

उद्याने कान् वृक्षान् वप्येत ? - तिलान् पुष्पितान् वा

वृक्षारोपणात् पूर्वं कं पूजयेत् ? - चन्द्रं ब्राह्मणं च

पुष्करिण्यां वाहयेत् - नदीवाहान् (नदी का प्रवाह)

द्रुमरोपणं कस्मिन् मुहूर्ते कारयेत् ? - अभिजित्

कस्मिन् नक्षत्रे वृक्षान् रोपयेत् ? (वृक्षारोपणं शुभं भवति)

ध्रुव-हस्त-पूर्वाषाढा, शतभिषा-मूलेषु

कुत्र नदीवाहान् प्रवेशयेत् ? - पुष्करिण्याम्

जलाशयनिर्माणावसरे कं देवं पूजयेत् ? वरुणं, विष्णुं पर्जन्यञ्च

सम्पूज्य .... तत्समाचरेत्। अत्र रिक्तं पूरणीयम् वरुणं विष्णुं पर्जन्यम्

घर्मान्ते (वर्षाकाले) कस्मिन् समये द्रुमरोपणीया:? सायं प्रातस्तु

शीतकाले वृक्षारोपणं कुर्यात् - दिनान्तरे (दोपहर)

वर्षाकाले कस्मिन् समये वृक्षारोपणमुत्तमं भवति ? - रात्रौ

वर्षारात्रौ द्रुमरोपणं भवति - भुवः (उत्तमम्)

शोषे के सेक्तव्याः? रोपिताः वृक्षाः

रोपिताः वृक्षाः कदा सेक्तव्याः ? शोषे (सूख जाने पर)

रोपिताः वृक्षाः शोषे किं कर्तव्याः? सेक्तव्याः

वृक्षाणां स्थानात् स्थानान्तरम् उत्तमाः भवन्ति - विंशतिर्हस्तान्तराः

वृक्षाणां कियद् अन्तराः मध्यमाः भवन्ति +- षोडशहस्तान्तराः

वृक्षाणां कियद् अन्तरा: अवरा: (अधमा:) भवन्ति ? द्वादशहस्तान्तरा:

आदौ वृक्षा: केन शोधनीयम् - शस्त्रेण

कीदृग्वृक्षा: विफला: भवन्ति? घना: वृक्षा:

......................कुलत्थैश्च माषैर्मुग्दैर्यवैस्तिलै:। अत्र अवशिष्टं पूरयतु

- फलनाशे

वृक्षस्य फलनाशे किं कुर्यात् ?

- कुलत्थ-माष-मुग्द-यव-तिलैः युक्तैः शीतवारिणा सिञ्चयेत

-

घृतशीतपयः सेकः .... सर्वदा - फलपुष्पाय

मत्स्याम्भसा सेकेन कस्य वृद्धिर्भवति ? शाखिनः

शाखिनः वृद्धिभवति.................... - मत्स्याम्भसा सेकेन

जलाशयसमारम्भे वारुणं चोत्तरात्रयम् । इत्यत्र उत्तरात्रयस्य नक्षत्राणि सन्ति।

उत्तराषाढा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपदञ्च

वृक्षाणां रोगमर्दनं करोति - विडङ्गतण्डुलोपेतं मात्स्यमांसदोहदम्

विडङ्गतण्डुलोपेतं मात्स्यं मांसं हि दोहदं किं करोति ? सर्वेषां वृक्षाणां रोगमर्दनम्

गोमांसमुदकं कति रात्रं निधापयेत् ? सप्तरात्रम्

सर्ववृक्षाः गोमांसोदकोत्सेकेन भवन्ति - फलपुष्पादिवृद्धिदाः

वृक्षायुर्वेदः

घर के किस दिशा में कौन सा वृक्ष शुभ है?

उत्तर- प्लक्ष (पाकड़)

पूर्व- वट (बरगद)

दक्षिण- आम्र (आम)

पश्चिम- अश्वत्थ (पीपल)

दक्षिण- कण्टकद्रुम (कांटे वाले बबूर, बेर आदि।)

वृक्षारोपण का शुभमुहूर्त - अभिजित्

वृक्षारोपण शुभनक्षत्र

1. ध्रुव (तीनों उत्तरा (उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद), रोहिणी और रेवती)

2. हस्त

3. पूर्वाषाढ़ा

4. शतभिषा

5. मूल

जलाशय बनवाने के लिये शुभ नक्षत्र हस्त, मघा, अनुराधा, अश्विनी, पुष्य, धनिष्ठा, शतभिषा और तीनों उत्तरा (उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद)

जलाशय बनवाने से पूर्व पूजनीय देवता - वरुण, विष्णु, पर्जन्य

लगाने योग्य उत्तम वृक्ष - नीम, अशोक, सोपारी, शिरीष, प्रियंगु, कदली (केला), जामुन, बकुल, और अनार।

एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष का अन्तर –

बीस हाथ का अन्तर - शुभ

सोलह हाथ का अन्तर - मध्यम

बारह हाथ का अन्तर - अधम